आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधो में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना

आजादी के पश्चात अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार की रफ्तार बहुत तेज हो गयी है। जनता में जब तक पुराने घपले-घोटाले की जानकारी पहुँचे, तब तक नया घोटाला सामने आ जाता है। आधुनिक युग की पीढ़ी के साहित्यकारों ने व्यंग्य के समस्त उपकरणों का प्रयोग करके इस पर प्रचुर मात्रा में व्यंग्य किया है।

आज व्यंग्य विधा उपेक्षा से हटकर सभी विधाओं में सरताज विधा बनी है। किंतु, आज भी इसके सैद्धांतिक पक्ष को लेकर गंभीर बहस नहीं हुई है। मूल्यांकन की दृष्टि से व्यंग्य साहित्य उपेक्षित रहा है। "आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधो में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना" यह ग्रन्थ इस न्यूनता की पूर्ति की विनम्र कोशिश है।

• व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति • अर्थ एवं पर्यायवाची शब्द • मान्यताएँ • भारतीय और पाश्चात्य दृष्टि से • तत्त्व और विशेषताएँ • व्यंग्य परम्परा • आदिकाल • भक्तिकाल • रीतिकाल एवं आधुनिक कालीन विधाओं में व्यंग्य परम्परा तथा पाश्चात्य, वैदिक एवं संस्कृत परम्परा • हिंदी के प्रमुख व्यंग्यकार-उनकी रचनाओं की विशेषताएँ • सांस्कृतिक चेतना • सामाजिक चेतना • राजनीतिक चेतना • उपसंहार ।

डॉ. बळीराम राख - एम.ए. (हिंदी) पी-एचडी । वर्तमान में पद्मभूषण वसंतदादा पाटील, कॉलेज, पाटोदा, शोध-निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष, स्नातक-स्नातकोत्तर विभाग, अध्यक्ष हिंदी भाषा एवं साहित्य अनुसंधान केंद्र।

Chandralok Prakashan

₹ 900/-

ISBN 978-93-84247-86-7

आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधो में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना

डॉ. बलीराम राख

आधुनिक हिंदी व्यंग्य निबंधो में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना

डॉ. बलीराम राख

Scanned with CamScanner